श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-नई दिल्ली (स्थापित सन् 1906)
का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

सन् 1913 से निरंतर प्रकाशित होने वाला स्थानकवासी जैन परंपरा का प्राचीनतम् गौरवशाली समाचार पत्र

जैन प्रकाश सम्पादकीय कार्यालय
जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-01
Tel.: 011-23363729, 23365420 Mob.: 9019731906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : https://jainconference.org

सम्पादक : डॉ. अमित जैन, बड़ौत
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com

श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.

श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.

श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

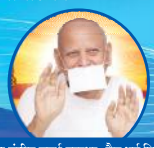
श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

अगस्त - तृतीय, अंक - 23 विक्रम संवत् - 2083 वीर संवत् - 2552 ईस्वी सन् - 2026

Address
Here

शिव संदेश

संयम और असंयम की परिभाषा

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

इन्द्रियों के विषयों के प्रति जितनी आसक्ति होगी उतनी ही उन विषयों की पूर्ति करने वाले साधनों (धन, स्त्री, पद, प्रतिष्ठा आदि) के प्रति आसक्ति होगी। साधनों के प्रति रही हुई इस आसक्ति के कारण व्यक्ति निरंतर उसी ओर पुरुषार्थ करता है, उनको पाने के लिए पुरुषार्थ करता है इस पुरुषार्थ का नाम असंयम है।

संयम क्या है? इन्द्रिय निग्रह के लिए जो पुरुषार्थ किया जाता है वह संयम है। और विषयों को जुटाने के लिए, प्राप्त करने के लिए जो पुरुषार्थ किया जाता है वह असंयम है। मूल बात तो मन की है। मन में यदि देह के प्रति आसक्ति रही तो नियम उपनियम का पालन करते हुए भी वह असंयम हैं, तब वह दिखावा कर रहा है, क्योंकि देहासक्ति से दबा हुआ उसका मन सदा विषयों के प्रति दौड़ रहा है। अतः बाहर से नियम उपनियम के द्वारा संयम का पालन करते हुए भी उसका पुरुषार्थ भीतर से इन्द्रियों की पूर्ति के लिए ही है तब वह असंयमी है।

पंडित कौन ? : खणं जाणाहि पंडिए - जो क्षण को जानता, पहचानता है वह पंडित है। क्षण अर्थात् धर्म साधना हेतु प्राप्त हुआ सुयोग्य अवसर। ऐसे तो क्षण का अर्थ होता है सुयोग्य अवसर। क्योंकि यहां पर धर्म के क्षेत्र में इसका प्रयोग हुआ है, अतः धर्म साधना हेतु सुयोग्य अवसर, जैसे भगवान महावीर गौतम स्वामी से कहते हैं कि 'समयं गोयम मा पमायए' हे गौतम! समय मात्र का प्रमाद मत करो, क्योंकि तीर्थंकर स्वयं उपस्थित हैं, तीर्थंकर के जाने के बाद सद्धर्म को पहचानना मुश्किल हो जाएगा। अतः जब तक सुयोग्य अवसर है अप्रमत्त होकर साधना करो।

पंडित अर्थात् जो पंडा से युक्त है। पंडा अर्थात् प्रज्ञा। सम्यग्ज्ञान, विवेक। जो इन से युक्त है उसे पंडित कहते हैं। ऐसे पंडित को सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि तुम अपनी पंडा के द्वारा क्षण को जानो।

किसी भी कार्य की सिद्धि पांच समवाय से होती है। या ऐसे भी कह सकते हैं द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव परिपक्व होने पर कार्य सिद्धि होती है। सुयोग्य अवसर का अर्थ धर्म साधना हेतु काल, स्वभाव, पूर्व कर्म का उदय और नियति अथवा द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, ये चारों ही परिपक्व हैं, धर्म साधना हेतु योग्य हैं, अब जीव के सविशेष उपयोग पूर्वक प्रयत्न की आवश्यकता है। दूसरा अर्थ जैसे अनेक लोग करते हैं। (शेष पृष्ठ 4 में)

अध्यक्षीय

चातुर्मास में धर्म केवल आराधना नहीं, जीवन की दिशा बने

- अतुल जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष
E-mail : ajvk1973@gmail.com

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। समय के साथ हमारा समाज, हमारी जीवनशैली और हमारी आवश्यकताएँ तेजी से बदल रही हैं। विज्ञान और तकनीक ने हमें अभूतपूर्व सुविधाएँ दी हैं, लेकिन इसी प्रगति के बीच आज मनुष्य के सामने एक बड़ी चुनौती अपने भीतर की शांति, पारिवारिक आत्मीयता, सामाजिक संवेदनशीलता और जीवन-मूल्यों को सुरक्षित रखने की भी है। अहिंसा, अनेकांत, अपरिग्रह और संयम, ये केवल शास्त्रों में पढ़ने के सिद्धांत नहीं, बल्कि आज की अनेक सामाजिक समस्याओं के समाधान की जीवन-पद्धति हैं। अहिंसा हमें व्यवहार और वाणी में करुणा सिखाती है। अनेकांत हमें यह स्वीकार करना सिखाता है कि हमारे विचार से भिन्न विचार रखने वाला व्यक्ति आवश्यक नहीं कि हमारा विरोधी हो। अपरिग्रह आवश्यकताओं को मर्यादित करता है और संयम मनुष्य को स्वयं पर शासन करना सिखाता है।

आज हमें स्वयं से यह प्रश्न पूछना चाहिए कि क्या धर्म हमारे जीवन में केवल पर्व, उपवास और धार्मिक आयोजनों तक सीमित है, अथवा हमारे व्यवहार में भी दिखाई देता है? यदि हमारे हृदय में जीवमात्र के प्रति करुणा है, व्यापार में प्रामाणिकता है, परिवार में प्रेम और बड़ों के प्रति सम्मान है, समाज के कमजोर व्यक्ति के लिए सहयोग का भाव है तथा अपनी सामर्थ्य का कुछ अंश मानव सेवा में समर्पित करने की भावना है, तभी हमारी धार्मिकता वास्तव में सार्थक है।

जैन समाज ने सदियों से शिक्षा, चिकित्सा, जीवदया, अन्नदान और जनकल्याण के क्षेत्रों में अनुकरणीय योगदान दिया है। अब समय है कि इस सेवा परम्परा को नई पीढ़ी से और मजबूती से जोड़ा जाए। हमारे युवाओं को धर्म से जोड़ने का अर्थ केवल उन्हें धार्मिक कार्यक्रमों में उपस्थित करना नहीं, बल्कि उन्हें धर्म के पीछे छिपे जीवन-विज्ञान और मानवीय मूल्यों से परिचित कराना है।

श्रमण संघीय अमृत महोत्सव वर्ष में जैन कॉन्फ्रेंस का भी यही संकल्प है कि समाज में धार्मिक चेतना, सामाजिक एकता, शिक्षा, युवा एवं महिला सशक्तिकरण, जीवदया और मानव सेवा की भावना को और व्यापक बनाया जाए। संगठन तभी सार्थक है जब वह अंतिम पंक्ति में खड़े समाजबंधु तक पहुँचे, उसकी पीड़ा को समझे और आवश्यकता के समय उसका संबल बने। आज आवश्यकता केवल समृद्ध जैन समाज की नहीं, बल्कि संगठित, संस्कारित, संवेदनशील और सेवाभावी जैन समाज की है।

आइए, हम संकल्प लें, हम धर्म को केवल मानेंगे नहीं, जीयेंगे, अहिंसा को केवल बोलेंगे नहीं, व्यवहार में उतारेंगे, और सेवा को केवल दान नहीं, अपना सामाजिक दायित्व समझेंगे।

हमारी चातुर्मासिक साधना आत्मकल्याण का मार्ग बने और हमारी सेवा जनकल्याण का माध्यम, इसी भावना में जैन धर्म की वास्तविक प्रभावना और समाज की सच्ची शक्ति निहित है।

सम्पादकीय

Gen-Z की दस्तक : क्या जैन समाज सुन रहा है?

- डॉ. अमितराय जैन - राष्ट्रीय महामंत्री

'देश की नई पीढ़ी ने अपने संवाद की भाषा बदल दी है। राजनीति और सामाजिक नेतृत्व उसके संकेतों को पढ़ने लगे हैं, अब जैन समाज को भी आत्ममंथन करना होगा कि उसके साधु-साध्वी, स्थानक और परिवार अपनी Gen-Z के प्रश्नों से कितने जुड़े हुए हैं।'

दिल्ली के जंतर-मंतर पर हाल में दिखाई दिया Gen-Z का युवा उभार केवल किसी तात्कालिक आंदोलन की घटना नहीं है। वह भारत की नई पीढ़ी की चेतना, उसकी अभिव्यक्ति-शैली, उसकी आकांक्षाओं और उसके आत्मविश्वास का एक महत्त्वपूर्ण संकेत है। इस पीढ़ी ने परंपरागत विरोध-प्रदर्शन की भाषा के स्थान पर डिजिटल माध्यमों, मीम, संगीत, हास्य और अपने विशिष्ट सांस्कृतिक संकेतों को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। संदेश स्पष्ट था-नई पीढ़ी को सुना जाए।

देश के राजनीतिक और सामाजिक नेतृत्व ने भी इस संकेत को समझना प्रारंभ किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी युवाओं को भारत के भविष्य की निर्णायक शक्ति के रूप में संबोधित कर रहे हैं। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहन भागवत ने भी युवाओं के संदर्भ में संवाद, स्नेह और समझ की आवश्यकता पर बल दिया है। यह बदलते समय की स्वाभाविक माँग है।

परंतु इस पूरे घटनाक्रम के बीच जैन समाज को स्वयं से एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण प्रश्न पूछना चाहिए-क्या हम अपनी Gen-Z को पर्याप्त रूप से सुन रहे हैं? जैन समाज की नई पीढ़ी हमारी चिंता का विषय नहीं, हमारी सबसे बड़ी आशा है। हमारे बालक-बालिकाएँ जैन धर्म के प्रति श्रद्धा रखते हैं। उन्हें अहिंसा, अपरिग्रह, संयम, करुणा और शाकाहार के संस्कार मिले हैं। वे अपनी परंपरा से विमुख होना नहीं चाहते, किंतु वे उसे अपनी भाषा में समझना चाहते हैं।

आज का युवा केवल यह नहीं पूछता-'क्या करना चाहिए?' वह पूछता है-'क्यों करना चाहिए?' यहीं हमारी परीक्षा है। स्थानकवासी जैन परंपरा मूलतः साधु-प्रेरित और साधु-आधारित परंपरा रही है। पीढ़ियों तक श्रमणों का सान्निध्य ही हमारे जीवन का सबसे बड़ा संस्कार-केंद्र रहा। किंतु आज प्रश्न यह है कि क्या हमारे साधु-साध्वी और हमारी Gen-Z के बीच उतना ही जीवंत, सहज और प्रत्यक्ष संवाद शेष है? आज के युवा को केवल उपदेश नहीं, उत्तर चाहिए। उसे केवल निषेध नहीं, निषेध का दर्शन चाहिए। उसे केवल परंपरा नहीं, परंपरा की प्रासंगिकता चाहिए। यदि उसके प्रश्नों के उत्तर उसे अपने धर्म के भीतर नहीं मिलेंगे, तो डिजिटल संसार उसे हजारों उत्तर देने के लिए तत्पर है। (शेष पृष्ठ 5 में)

J. P. Jain Foundation
(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)
सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन

चेयरमैन अभय जैन | महामंत्री अतुल जैन | कोषाध्यक्ष अमित जैन

- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9717524774 Email.: foundationjpjain@gmail.com

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद
युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.
आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.
उपाध्याय मण्डल
परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'
प्रवर्तक मण्डल
परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.
मंत्री मण्डल
परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)
सलाहकार मण्डल
परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'
प्रवर्तिनी मण्डल
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल

श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन	93021 03817
श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना	98505 00015
श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98110 45440
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035
डॉ. अमिताय जैन, बड़ौत	98373 94448
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795
श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
श्री विनय कुमार जैन, पानीपत	83968 00000
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98110 42280
श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	82862 00000
श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
श्री सुनील वाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमिताय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विजय जैन, पानीपत	98966 00022
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई	76665 40600
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

श्रद्धा सत्य-सुता

– मानव मिलन संस्थापक नेपाल केसरी डॉ. मणिभद्र मुनि जी म.

श्रद्धा का अर्थ है वह भावदशा जो सत्य से सृजित हुई है। श्रद्धा का जन्म सत्य के गर्भ से होता है। सत्य के गर्भ से समुत्पन्न श्रद्धा अकाट्य, अटूट और अटल होती है। उस श्रद्धा को कोई छीन नहीं सकता है। उस श्रद्धा को कोई विचलित नहीं कर सकता है। सत्य से उत्पन्न श्रद्धा को भगवान महावीर ने सम्यक् श्रद्धा कहा है। सम्यक् अर्थात जो सत्य से जन्मी है, जिसके मूल में सत्य स्थापित है। वह श्रद्धा जो मान्यता से जन्मी है वह मिथ्या श्रद्धा है। मिथ्यात का अर्थ है मान्यता। जिसे जाना नहीं गया है और जो जीवन का सच नहीं हो सकता है वह है मिथ्यात। इसलिए मान्यता के गर्भ से निकली हुई श्रद्धा कदम-कदम पर खण्डित बनती है। मिथ्यात से उत्पन्न श्रद्धा पग-पग पर ढ़ह जाने के भय से भयभीत रहती है।

जगत के अधिकतम लोग मान्यता से समुत्पन्न श्रद्धा को जीते हैं। इसलिए हम आए दिन श्रद्धा की उठती हुई अर्थियां देखा करते हैं। जरा-सी हवा बहती है और लोगों की आस्थाएं हिल जाती हैं। ऐसी आस्था और ऐसी श्रद्धा जो मान्यता से निकली है का नष्ट हो जाना ही श्रेष्ठ है। क्योंकि मान्यता से निर्मित श्रद्धा ने ही हमें आज तक भटकाए रखा है। रोज-रोज मान्यताएं बदलती हैं और रोज-रोज हमारी श्रद्धाएं खिसकती हैं।

श्रद्धा के जन्म का एक अन्य गर्भ है, भय। भय के कारण भी लोग श्रद्धालु हो जाते हैं। नरक का भय, दुख का भय, अपयश का भय, और न जाने कितने-कितने प्रकार के भय हैं जिनमें लिपटकर लोग श्रद्धा को ढोया करते हैं। भय से जन्मी श्रद्धा भी श्रद्धा नहीं है।

श्रद्धा तो सत्य से बहती है। सत्यानुभूति हो गई तो श्रद्धा स्वतः समुत्पन्न हो जाएगी। श्रद्धा सत्य का सहज परिणाम है। आपने मधु को जबान पर रखा। आप मधु के मिठास से परिचित बन गए। उस मिठास का अनुभव आपकी श्रद्धा है। कोई लाख कहे कि मधु कड़वा होता है पर आप उसकी बात नहीं मानेंगे। आप उस पर हंस सकते हैं, उस पर करुणा कर सकते हैं पर उसके दावे से सहमत नहीं हो सकते हैं। क्योंकि मधु को आप स्वयं चख चुके हैं। जिस सत्य को आप स्वयं जान लेते हैं, स्वयं चख लेते हैं वहां स्वतः ही श्रद्धा का जन्म हो जाता है।

पर आज हम देखते हैं कि सब ओर एक ही शोर है, एक ही आग्रह है कि श्रद्धा करो, श्रद्धा करो। हिन्दू कहते हैं कि हिंदूत्व पर श्रद्धा करो, क्योंकि हिन्दू धर्म ही सनातन धर्म है। मुस्लमान कहते हैं कि कुरान पर श्रद्धा करो, क्योंकि वह खुदा के मुख से प्रगट हुई है। जैन कहते हैं कि जैन धर्म ही एकमात्र द्वार है मोक्ष जाने का। कैसा है यह शोर? मैं समझता हूँ कि यह शोर वे लोग मचाते हैं जिन्होंने धर्म को जाना ही नहीं है। यह शोर उन्हीं कण्ठों से उभरता है जिन्होंने श्रद्धा के स्वाद को चखा ही नहीं है। क्या श्रद्धा कोई ऐसा जाम है कि लगाओ मुँह से और गले से नीचे उतार लो! नहीं, श्रद्धा तो अनुभव का विषय है। श्रद्धा तो स्वाद का विषय है।

सुदर्शन सेठ उस स्वाद को चख चुके थे। लाख समझाया लोगों ने कि महावीर तक पहुँचने में अर्जुन नामक मौत के दरिया को तैरना होगा और अर्जुन माली मौत का एक ऐसा दरिया है जिसमें हजारों लोग डूब चुके हैं। माता-पिता और पनी ने अर्जुन को विविध दलीलें देकर समझाया, और इतना ही नहीं, स्वयं सम्राट श्रेणिक ने उन्हें समझाया। पर सुदर्शन मानें भी तो कैसे मानें। उन्हें यह अनुभव है कि महावीर के मार्ग पर मृत्यु है ही नहीं। उन्हें यह बोध है कि महावीर के मार्ग पर यदि मृत्यु घटी भी तो उस मृत्यु पर लाखों-लाख जीवन न्यौछावर किए जा सकते हैं। और अन्तगड के शिला-लेख साक्षी हैं कि सुदर्शन के समक्ष मृत्यु कांप उठी। तिनके की तरह निःसंदेह ऐसे श्रद्धालू को जगत से सम्मान न मिलेगा। और सम्मान मिल नहीं सकता है। ऐसे श्रद्धा-पुरुष तो जमाने भर का विरोध झेलते हैं? क्योंकि उनमें प्रगट हुआ सत्य जमाने के सत्य से मेल नहीं खाता है। उनमें खिले श्रद्धा के फूल जमाने के फूलों से मेल नहीं खाते हैं। और ऐसे लोग जमाने द्वारा नकार दिए जाते हैं। ऐसे ही किन्हीं लोगों को जमाना शूली पर चढ़ा देता है, किन्हीं को क्रॉस पर लटका देता है, किन्हीं को विष पिला देता है।

श्रद्धा सुलभ नहीं है। क्योंकि सत्य सुलभ नहीं है। सत्य के उपलब्ध होते ही श्रद्धा प्राणवन्त बन जाती है। इसलिए मैं आपसे कहूंगा, श्रद्धा की चिन्ता छोड़ो, सत्य का अनुसंधान करो। सत्य के सधते ही श्रद्धा स्वयं सध जाएगी। सत्य की छाया ही सत्य का सत्व है और सत्य का प्रसव ही श्रद्धा है। सत्य की सुता है।

बदलता समाज और हमारी जिम्मेदारी:संस्कारों से ही सुरक्षित होगा भविष्य

– विजय जैन, राष्ट्रीय चेयरमैन-जैन कॉन्फ्रेंस

समय बदल रहा है, समाज बदल रहा है और हमारे जीवन की प्राथमिकताएँ भी तेजी से बदल रही हैं। तकनीक ने दुनिया को हमारी मुट्ठी में ला दिया है, लेकिन इसी दौर में यह प्रश्न भी हमारे सामने खड़ा है कि कहीं सुविधाओं की इस दौड़ में हम अपने संस्कारों, संबंधों और सामाजिक दायित्वों से तो दूर नहीं होते जा रहे?

आज हमारे पास संवाद के साधन पहले से कहीं अधिक हैं, फिर भी परिवार में आत्मीय संवाद कम होता दिखाई देता है। सोशल मीडिया ने हमें हजारों लोगों से जोड़ दिया, लेकिन कई बार अपने ही परिवार के सदस्यों के लिए हमारे पास पर्याप्त समय नहीं बचता। विशेषकर नई पीढ़ी का जीवन डिजिटल माध्यमों से गहराई से जुड़ चुका है। इसलिए आवश्यकता तकनीक से दूरी बनाने की नहीं, बल्कि उसके विवेकपूर्ण और संयमित उपयोग की है। हाल के अध्ययनों में भी किशोरों के बढ़ते इंटरनेट उपयोग के साथ साइबर सुरक्षा और संतुलित डिजिटल व्यवहार की आवश्यकता रेखांकित की गई है।

ऐसे समय में जैन दर्शन के सिद्धांत और भी प्रासंगिक हो जाते हैं। अहिंसा हमें केवल किसी जीव को कष्ट न देने की शिक्षा नहीं देती, बल्कि वाणी और विचारों में भी संवेदनशील बनने का संदेश देती है। अपरिग्रह हमें अनावश्यक संग्रह और उपभोग की दौड़ से बचाता है। संयम इच्छाओं को मर्यादित करना सिखाता है और अनेकांत दूसरे के विचार को समझने और सम्मान देने की दृष्टि प्रदान करता है।

समाज की सबसे बड़ी शक्ति हमारी युवा पीढ़ी है। युवाओं को केवल सफल व्यवसायी, डॉक्टर, इंजीनियर या प्रोफेशनल बनाना पर्याप्त नहीं है, उन्हें संवेदनशील और उत्तरदायी नागरिक बनाना भी हमारी जिम्मेदारी है। वर्तमान में युवाओं को सामुदायिक सेवा, कौशल विकास और स्वयंसेवा से जोड़ने के प्रयास भी बढ़ रहे हैं। जुलाई 2026 तक MY Bharat मंच पर 1.52 लाख से अधिक स्वयंसेवी अवसर उपलब्ध होने की जानकारी दी गई है। यह संकेत है कि युवा शक्ति को यदि सकारात्मक दिशा मिले तो वह समाज परिवर्तन की बड़ी वाहक बन सकती है।

जैन समाज को भी अब संस्कार से सेवा और सेवा से समाज निर्माण की दिशा में और संगठित प्रयास करने होंगे। हमारे मंदिर, स्थानक, भवन और संस्थाएँ धर्माराधना के साथ शिक्षा, संस्कार, जीवदया, जरूरतमंदों की सहायता, युवा मार्गदर्शन और सामाजिक सेवा के सक्रिय केंद्र बनें। समाज का समर्थ वर्ग यदि जरूरतमंद परिवार का हाथ थामे और अनुभवी पीढ़ी युवाओं को मार्गदर्शन दे, तो संगठन की सार्थकता कई गुना बढ़ सकती है।

हमें यह भी समझना होगा कि अगली पीढ़ी को केवल संपत्ति सौंपना पर्याप्त नहीं है। यदि हम उन्हें संस्कार, सेवा की भावना और समाज के प्रति उत्तरदायित्व सौंप सके, तो वही हमारी सबसे बड़ी विरासत होगी।

आइए, हम ऐसा जैन समाज बनाने का संकल्प लें जो आधुनिक भी हो और संस्कारित भीय समृद्ध भी हो और संवेदनशील भीय तकनीक में आगे हो, लेकिन अपनी जड़ों से मजबूती से जुड़ा रहे। क्योंकि समाज की वास्तविक उन्नति भवनों की ऊँचाई से नहीं, बल्कि उसके सदस्यों के चरित्र, करुणा और सेवा-भाव की ऊँचाई से मापी जाती है। यही समय की आवश्यकता है और यही हमारी सामूहिक जिम्मेदारी भी।

वर्जना और वर्षा

एक बार राजा अमन सिंह हाथी पर चढ़े घूमने जा रहे थे। उनका हाथी अलबेला व मस्त था। राजा जब उस पर चढ़ कर घूमने निकलते थे तो दो दिन पहले से हाथी को विशेष रंगों से चित्रित कर उसका श्रृंगार किया जाता था। पैरों के मोड़ पर विशेष प्रकार के आभूषण पहनाये जाते! नाखून रंगे जाते। हाथी के श्रृंगार का सर्वाधिक आकर्षण था, हाथी की झूल। जब हीरे-जवाहरात व मोती जड़ी झूल पहने हाथी चलता तो लगता देवेन्द्र का ऐरावत पृथ्वी पर उतर आया है। हाथी मस्ती में झूमता जा रहा था, मोती जड़ी झूल लहरा रही थी, घंटार्णव हो रहा था। मौज-मस्ती का आलम था। दोनों ओर खड़े प्रजाजन जयकार कर रहे थे।

एक नाई भी उस भीड़ में खड़ा था। हाथी की झूल में जड़े हीरे मोती देख कर उसका मन डोल गया। वह सोचने लगा-मैं आँख बचा कर दो-चार मोती तोड़ लूँ तो किसको क्या पता चलेगा?

नाई ने देखा, राजा सामने देख रहा है, लोग जयकार में लगे हैं। फुर्ती से उसने हाथ बढ़ाकर झूल से एक मोती तोड़ लिया। राजा की निगाह पड़ गई। राजा को बहुत गुस्सा आया।

उसने सिपाहियों को आदेश दिया-नाई को रस्सी में बाँधकर तालाब में डुबाते-निकालते रहो। ऐसा तब तक करते रहना जब तक उसके प्राण-पखेरू उड़ न जायें। सजा सुनी। नाई बहुत घबराया। वह माफी माँगने लगा परन्तु उसकी किसी ने न सुनी। सिपाही उसे ले गये तालाब पर। नाई को जैसे राजा का आदेश था, रस्सी से बांधा और तालाब में पटक दिया। थोड़ी देर में खींचकर बाहर निकाला। फिर पटक दिया। यूं करते मरणासन्न हालत हो चली नाई की। राजा के हाथी की झूल से मोती तोड़ लेने का इतना बड़ा दण्ड उसे भोगना पड़ सकता है, इसकी तो उसने कल्पना तक नहीं की थी।

आखिर में जब तालाब से खींचकर उसे बाहर निकाला तो वह बोला-बस, बहुत हो गया। अब मुझमें दम नहीं है कि मैं तालाब में जीवित बच सकूं। मरते समय तो कम से कम मेरी एक इच्छा पूरी कर दो। सिपाहियों ने पूछा-बोल क्या है तेरी इच्छा? वह बोला-मुझे अंतिम समय राजा के दर्शन करा दो। नाई ने इच्छा ही ऐसी प्रकट कर दी कि सिपाहियों को उसकी बात माननी पड़ी। एक सिपाही राजमहल पहुँचा। राजा से कहा-महाराज नाई मरने वाला है। अंतिम समय में वह आपके एक बार दर्शन करना चाहता है। बतायें क्या आज्ञा है?

राजा बोला-उसे बंधन मुक्त कर दो और मेरे पास ले आओ।

नाई को तालाब से महलों में लाया गया। दरबार में उपस्थित किया गया। राजा सिंहासन पर बैठे थे। नाई तुरंत राजा के चरणों में दण्डवत् मुद्रा में लेट गया। बोला-महाराज! मैंने आपका रोष तो देख लिया, अब मैं कृपा देखना चाहता हूँ। दुनिया से चला जाऊँगा। मन की बात मन में ही रह जाएगी कि राजा की कृपा कैसी होती है। नहीं देख पाया। राजा नाई की बात सुन पुलकित हो गया। बोला-देख ले। मन की मन में मत रखना। राजा ने सेवकों को आदेश दिया-जाओ! हाथी का पूरा श्रृंगार करो। झूल ओढ़ाओ और मुझे सूचित करो कि हाथी तैयार है। थोड़ी देर में सेवक आया। मुजरा किया। निवेदन में कहा-महाराजाधिराज का हाथी तैयार है। राजमहल के बाहर खड़ा है। राजा ने सिपाहियों से कहा-उसी हाथी पर नाई को बिठाया जाये! नगर में घुमाकर नाई के घर पर पहुँचा दो इसे! हाथी झूल सहित नाई के घर छोड़ आना। यह इसी का हो गया आज से। नाई निहाल हो गया।

ज्ञान गंगोत्री पूज्य प्रवर्तनी श्री प्रभाकंवर जी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष शुभारंभ के अवसर पर विशेष..

शताब्दी नायिका युगप्रेरक साध्वी जीवन की गौरवगाथा

महाराष्ट्र प्रवर्तिनी पू. श्री प्रतिभाकंवर जी म., बदनावर

जैन साधना परंपरा में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं, जिनका जीवन केवल उनका अपना जीवन नहीं रहता। उनका प्रत्येक कदम आने वाली पीढ़ीयों के लिए दिशा बन जाता है। उनकी प्रत्येक साधना किसी दूसरे साधक के भीतर प्रेरणा का दीप जला देती है और उनके प्रत्येक त्याग धर्म की विराट परंपरा को और अधिक गौरवान्वित कर देता है।

ऐसे ही तेजस्वी, तपस्वी, ज्ञानमयी और दृढ़ साध्वी व्यक्तित्त्व का नाम हैं पूज्य श्री प्रभाकंवरजी म. सा.। उनका नाम लेते ही मन के भीतर श्रद्धा का भाव जाग उठता है। उनके जीवन को जिन विशेषणों से अलंकृत किया गया 'महाराष्ट्र प्रवर्तिनी' 'ज्ञान गंगोत्री, 'विदर्भ ज्योती' 'पंडित रत्ना' ये केवल सम्मानसूचक शब्द नहीं है। बल्कि दीर्घ साधनामय जीवन के विभिन्न आयामों का परिचय देते हैं। किसी को 'ज्ञान गंगोत्री' कहना बहुत बड़ी बात है। गंगोत्री स्वयं ज्ञान की उस धारा का प्रतीक है, जहाँ से निरंतर केवल निर्मल प्रवाह निकलता है। उसी प्रकार प्रभाकंवरजी म.सा. का जीवन ज्ञान का ऐसा स्तोत्र रहा जहाँ से असंख्य श्रावक-श्राविकाओं, साधु-साध्वियों और जिज्ञासु आत्माओं ने प्रेरणा प्राप्त की।

संस्कारों की भूमिपर जन्मी एक महान आत्मा : पूज्य प्रभाकंवरजी म. सा. का जन्म विक्रम संवत् 1984, श्रवण सुदी पंचमी ईस्वी सन् 2 अगस्त 1927 को डोंगर सेवली जिला जालना में हुआ। उनके पिता थे - धर्मानुरागी श्री श्रीचंदजी बैदमुथा और माता थी धर्मानुरागिनी राजमतीदेवी बेदमुथा। जिस घर में धर्म केवल बोलने का विषय न होकर जीवन का संस्कार होता हैं। वहाँ जन्म लेने वाली आत्मा के भीतर बचपन से ही आध्यात्मिक चेतना के बीज पड़ते है। प्रभाकंवरजी म.सा. का जीवन भी ऐसे ही धार्मिक-संस्कारों से पुष्ट हुआ है। उनका प्रारंभिक जीवन हमें यह संदेश देता है कि महान साधु-साध्वी अचानक नहीं बनते। उनके भीतर बचपन से ही संस्कारों की वह भूमि तैयार होती रहती है, जिसमें आगे चलकर वैराग्य का बीज विशाल वटवृक्ष बनता है। गुरुवर्या एक विरली आत्मा थी, उनके भीतर वैराग्य की भावना इतनी प्रबल थी की सांसारिक परिस्थितियाँ भी उनकी साधना की दिशा को रोक नहीं सकीं। उनके जीवन का दीक्षा प्रसंग तो विशेष रूप से प्रेरणादायी है। दीक्षा के समय पारिवारिक लोगों द्वारा न्यायालय में यह किया गया कि वे दीक्षा न लें। परिस्थितियाँ कठिन थीं, लेकिन उनकी वैराग्य भावना इतनी बलवती थी कि उन्होने अपने आत्मिक निर्णय से पीछे हटना स्वीकार नहीं किया।

यह प्रसंग गुरुवर्या के जीवन में रही दृढ़ता का अत्यंत प्रभावशाली उदाहरण है। दीक्षा को लेकर बात न्यायालय तक पहुंची। उस समय अंग्रेजों की सत्ता थी। बड़े पिताजी श्री नंदलालजी का दीक्षा के लिए विरोध था, क्योंकि छोटे भाई की इकलौती लड़की का वे विवाह करना चाहते थे। वे सोचते समाज क्या कहेगा, दुनिया में अपवाद फैलेगा कि पिताजी का स्वर्गवास हो गया तो उसे दीक्षा दिला दी पर गुरुवर्या ने इस विचार को परास्त कर दिया और बड़े पिताजी को कहा में विवाह नहीं करूँगी। इसी नकार से बड़े पिताजी न्यायालय में पहुंचे, गुरुवर्या ने न्यायाधीश के प्रश्नों के जवाब इतनी सटीकता एवं दृढ़ता के साथ दिये कि उनकी प्रबल भावना और वैराग्य को देख, न्यायाधीश ने यह निर्णय लिया कि रविवार को न्यायालय खुला रहेगा और अंग्रेज पुलिस प्रोटेक्शन के तहत दीक्षा संपन्न होगी। वि.स. 1999, ईस्वी सन, 8-03-1943 फाल्गुण शुक्ला 2, सोमवार, बुलढ़ाणा में दीक्षा सम्पन्न हुई।

गुरुवर्या के दीक्षा गुरु कर्नाटक गजकेशरी पूज्य गणेशीलालजी म.सा. तथा दीक्षा गुरुणीसा विदर्भ सिंहनी पूज्य श्री मानकंवरजी म. थे। गुरुवर्या श्री मानकंवरजी म.सा. के श्रीचरणों में दीक्षित होने के बाद 32 आगमों का गहन अध्ययन किया। तीन वर्ष में लघु सिद्धान्त कौमुदि साधनिका सहित स्याद्वाद मंजरी, पंचतंत्र हितोपदेश, रघुवंश चाणक्य-नीति, अमरकोष, संस्कृत-प्राकृत व्याकरण आदि भाषा का गहन अध्ययन किया। अल्पकाल में ही अब आपने जैन सिद्धान्ताचार्य एवं साहित्यरत्न की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपने कभी विद्या-पढ़ने में जरा भी, आलस प्रमाद किया नहीं। आपश्री ने पंडितजी के पास से न्याय-दर्शन, वेदशास्त्र, तर्कशास्त्र, याज्ञवक्ल्य स्मृति, मनुस्मृति, गीता आदि का ज्ञान प्राप्त किया और साथ ही कुराण, पुराण, बाइबल आदि ग्रन्थों का अवलोकन किया। अंग्रेजी, उर्दू, अरबी आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। उन्हें ज्ञान गंगोत्री, विदर्भ सिंहनी, कोटा संघ प्रवर्तिनी, महाराष्ट्र प्रवर्तिनी आदि अनेक पदवियाँ प्रदान की गई थीं। विषेश उल्लेखनीय बात यह है कि शिष्याओं को तो आपने बहुत दीक्षा दी पर कुछ परिस्थितियाँ ऐसी आयी की हमारे संप्रदाय यानि कोटा संप्रदाय में संतो का अभाव हो गया था, आपश्री ने अनेक ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए, आपकी नजर जौहरी की तरह पारखी थी तथा आपने हिंगनघाट निवासी धर्मप्रेमी श्री प्यारेलालजी सिंघी को दीक्षा प्रवर्ज्या ग्रहण करायी तथा इस संत परंपरा को अक्षुण्ण रखा। उसके बाद पांच-छः संतों को प्रवर्ज्या ग्रहण करायी और आज लगभग 10-12 संतो से यह परंपरा आगे बढ़ रही है। यह सारी कृपा प.पू. गुरुवर्या की रही है।

गुरुवर्या का शताब्दी वर्ष प्रारंभ हो रहा है, हम सबको उनके संस्कार उपदेश, तप, त्याग और प्रेरणा को अपने जीवन में आत्मसात करना है। गुरुवर्या का जीवन हमारे लिए एक उज्ज्वल दीपक की तरह था। उस दीपक में वैराग्य का तेल था। संयम की बाती थी। ज्ञान की ज्योति थी। तप की उष्मा थी। त्याग की सुंगध थी और आत्मकल्याण की दिशा थी। उनका जीवन हमें पुकारता है। संसार में रहो, पर संसार को अपने भीतर मत बसने दो। सम्मान-मिले, पर अहंकार मत आने दो। कठिनाई आए, पर संकल्प मत छोडो। ज्ञान मिले पर विनय मत छोडो। साधना करो पर उसका अभिमान मत करो। धर्म सुनो पर उसे जीवन में उतारो। यही उनकी उनके जीवन का वास्तविक गुणानुवाद है। ऐसी महान आत्मा को तपस्वी आत्मा, ज्ञानमयी विभूति, दृढ़ साधिका और धर्म प्रवर्तिनी के चरणों में कोटि-कोटि वंदन-नमन है। 'ज्ञान की गंगोत्री बनकर जो युगों तक बहती रही, संयम की ज्योति बनकर जो अंधकार हरती रहीं।

वैराग्य को जीवन बनाया तप को अपना मान,
ऐसी पुण्य आत्मा को हमारा शत्-शत् प्रणाम ।।

श्री मरूधर केसरी गुरूभ्यो नमः
देवानुप्रिय सेठ सा श्री माणकचंद सा श्रीमती रूप लता जी बोहरा की पावन स्मृति में
नरेश - बबिता, हर्ष - साधना, सौ. कां. करिश्मा, थिया बोहरा जैन - मुम्बई - जोधपुर
HaloVerse Entertainment Pvt Limited. Mumbai
Jupiter City Developers India Pvt. Ltd. Mumbai
XL Energy Ltd.
नरेश बोहरा जैन
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन - जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
कार्याध्यक्ष - पावन धाम, जैतारण, राजस्थान
7666540600 Jainn07@gmail.com
जय गुरू रूप
जय गुरू मरूधर केसरी
जय गुरू सुकन
कोटिशः वंदन नमन

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

प्रमाद से प्रमोद

सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार

लेखक-गुरुभक्त अतुल जैन

(गतांक से आगे) अध्याय 29

नाभि-अस्तित्व का गुरुत्व केंद्र

(गहन विस्तार)

यदि मन आकाश की तरह है, तो नाभि पृथ्वी की तरह है। मन फैलता है, उड़ता है, कल्पना करता है। नाभि स्थिर करती है, धारण करती है, आधार देती है। जब जीवन सिर में अधिक और नाभि में कम होता है, तो असंतुलन जन्म लेता है। जब ध्यान नाभि में स्थिर होता है, तो भीतर एक अनकहा भरोसा जन्म लेता है। इसलिए नाभि को अस्तित्व का गुरुत्व केंद्र कहा गया है।

1. गुरुत्व का अर्थ : गुरुत्व का अर्थ है-वह बिंदु जहाँ से संतुलन बना रहता है। यदि गुरुत्व ऊपर खिसक जाए, तो स्थिरता खो जाती है। ठीक वैसे ही, यदि ध्यान लगातार विचारों में उलझा रहे, तो जीवन असंतुलित हो जाता है। नाभि ध्यान को नीचे लाती है।

2. नाभि और स्थिरता : जब आप सचेत होकर अपना ध्यान नाभि पर लाते हैं, तो भीतर एक हल्की ठहराव की अनुभूति होती है। विचार तुरंत समाप्त नहीं होते, पर उनकी तीव्रता कम हो जाती है। नाभि आपको वर्तमान में जड़ देती है।

3. अस्तित्व-भरोसा : नाभि का गहरा संबंध अस्तित्व-भरोसे से है। जब व्यक्ति भीतर से कह सकता है-"मैं धारण किया जा रहा हूँ," तो कर्ताभाव नरम होता है। यह भरोसा बौद्धिक नहीं, अनुभवात्मक है।

4. ऊर्जा का अवरोहण : अक्सर जीवन ऊपर केंद्रित रहता है-सिर, विचार, योजना। जब श्वास के साथ ध्यान नाभि में आता है, तो ऊर्जा नीचे उतरती है। यह अवरोहण प्रयास नहीं, अनुमति है। ऊर्जा को नीचे आने दें।

5. नाभि और निर्णय : नाभि में स्थिरता होने पर निर्णय अधिक संतुलित होते हैं। वे केवल विचार पर आधारित नहीं होते, बल्कि अनुभूति से जुड़े होते हैं। सिर विश्लेषण देता है। नाभि संतुलन देती है।

6. असुरक्षा और नाभि : यदि नाभि में लगातार कसाव हो, तो संभव है कि भीतर सूक्ष्म असुरक्षा सक्रिय है। ऐसे में श्वास को वहाँ तक ले जाना, और केवल अनुभव करना - धीरे-धीरे आधार को पुनर्स्थापित कर सकता है।

7. नाभि-ध्यान का अभ्यास : दिन में कुछ मिनट सीधे बैठें। ध्यान नाभि पर रखें। श्वास को पेट तक जाने दें। नाभि के हल्के उठने-गिरने को देखें। कुछ न बदलें। सिर्फ देखें। धीरे-धीरे स्थिरता गहरी होगी।

8. सिर से नाभि तक की यात्रा : प्रमाद की अवस्था में ऊर्जा ऊपर फँसी रहती है। प्रमोद की दिशा में ऊर्जा नीचे स्थिर होती है। सिर से नाभि तक की यात्रा ही अहंकार से साक्षी तक की यात्रा है।

9. स्थिरता और स्वतंत्रता : स्थिरता जड़ता नहीं है। वह गहराई है। जब नाभि में स्थिरता आती है, तो व्यक्ति अधिक स्वतंत्र होता है। क्योंकि उसका आधार भीतर है, बाहर नहीं।

10. अंतिम स्पष्टता : नाभि अस्तित्व का गुरुत्व केंद्र है। वहाँ ध्यान टिके तो कर्ताभाव नरम होता है। नियंत्रण ढीला पड़ता है। भय कम होता है। अगले अध्याय में हम समझेंगे-श्वास का नाभि से जुड़ना आंतरिक परिवर्तन की कुंजी कैसे बनता है। (क्रमशः)

जैन दर्शन के विदेशी विद्वान श्रृंखला...

जर्मनी का वह मनीषी जिसने यूरोप में जैन अध्ययन की नींव रखी...

प्रो. अल्ब्रेट्र वेबर : पांडुलिपियों से जैन दर्शन को विश्वपटल तक पहुँचाने वाले भारतविद् !

- प्रोफेसर डॉ. आंचल जैन

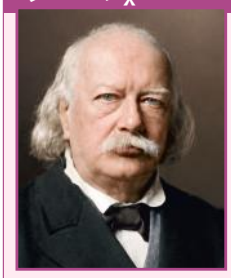

उन्नीसवीं शताब्दी में जब यूरोप के विश्वविद्यालयों में भारतीय भाषाओं, दर्शन और प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन का नया युग प्रारम्भ हो रहा था, उसी समय जर्मनी से एक ऐसे विद्वान का उदय हुआ जिसने भारतीय ज्ञान-परंपरा को केवल जिज्ञासा का विषय नहीं माना, बल्कि उसे गंभीर अकादमिक अनुसंधान का आधार बनाया। यह विद्वान थे प्रो. अल्ब्रेट्र वेबर (1825-1901)। संस्कृत, वैदिक साहित्य और भारतीय दर्शन के साथ-साथ जैन आगमिक साहित्य के व्यवस्थित अध्ययन में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

विशेष बात यह है कि उन्होंने कभी भारत की यात्रा नहीं की, फिर भी भारतीय ग्रंथों का जितना गहन अध्ययन उन्होंने किया, वह अपने समय में विरल उदाहरण था। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि प्रामाणिक अनुसंधान केवल यात्राओं से नहीं, बल्कि मूल स्रोतों के धैर्यपूर्ण और निष्पक्ष अध्ययन से भी संभव है।

पुस्तकालय बना उनका तीर्थ : बर्लिन विश्वविद्यालय का विशाल पुस्तकालय ही प्रो. वेबर की कर्मभूमि था। भारत से पहुँची ताड़पत्र पांडुलिपियाँ, संस्कृत और प्राकृत के दुर्लभ ग्रंथ तथा जैन आगम उनके दैनिक अध्ययन का विषय बने। वे घंटों तक पांडुलिपियों के पाठभेदों की तुलना करते, कठिन शब्दों का अर्थ खोजते और प्राचीन भारतीय परम्पराओं की ऐतिहासिक कड़ियों को जोड़ने का प्रयास करते थे। उनकी यह साधना केवल भाषावैज्ञानिक अभ्यास नहीं थी, बल्कि भारतीय बौद्धिक परंपरा को समझने का एक गंभीर प्रयास थी।

जैन आगमों को मिला वैज्ञानिक अध्ययन : यूरोप में जैन धर्म पर आरंभिक और व्यवस्थित अनुसंधान करने वाले विद्वानों में प्रो. वेबर का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्होंने जैन आगमों, उपांगों और प्राकृत साहित्य का ऐतिहासिक तथा भाषाशास्त्रीय विश्लेषण किया। उनके शोधों ने यह स्पष्ट किया कि जैन धर्म का अपना स्वतंत्र दार्शनिक, नैतिक और साहित्यिक विकासक्रम है, जिसे अन्य भारतीय परम्पराओं में विलीन करके नहीं देखा जा सकता।

उनकी विद्वत्ता के कारण पहली बार यूरोपीय शिक्षाविदों के बीच जैन धर्म को एक स्वतंत्र और प्राचीन दार्शनिक परम्परा के रूप में गंभीरता से स्वीकार किया जाने लगा।

इंडिशे स्टुडियन से खुला नया अध्याय : सन् 1849 में प्रो. वेबर ने 'इंडिशे स्टुडियन' (Indische Studien) नामक शोध-पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया। यह केवल एक पत्रिका नहीं थी, बल्कि भारतविद्या के गंभीर अध्येताओं के लिए एक महत्वपूर्ण मंच सिद्ध हुई। इसमें प्रकाशित उनके शोध-लेखों ने जैन साहित्य, प्राकृत भाषा और भारतीय दर्शन के अनेक उपेक्षित पक्षों को अंतर्राष्ट्रीय विद्वत् समाज के सामने रखा।

दक्षिण भारत के जैन इतिहास की ओर भी रही दृष्टि : यद्यपि वे स्वयं भारत नहीं आए, फिर भी उपलब्ध अभिलेखों, पांडुलिपियों और पूर्ववर्ती स्रोतों के आधार पर उन्होंने दक्षिण भारत के जैन इतिहास का गंभीर अध्ययन किया। आचार्य भद्रबाहु और सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के दक्षिण गमन, दिगम्बर और श्वेताम्बर परम्पराओं के विकास तथा श्रवणबेलगोला की ऐतिहासिक भूमिका पर उनके विचार उस समय के यूरोपीय शोध-जगत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुए।

संस्कृत और भारतविद्या के शीर्ष विद्वान : प्रो. वेबर की प्रसिद्ध कृति 'भारतीय साहित्य के इतिहास पर अकादमिक व्याख्यान' (Akademische Vorlesungen Uber Indische Literaturgeschichte) आज भी भारतीय साहित्य और संस्कृति के इतिहास के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण संदर्भ मानी जाती है। विश्वविख्यात सेंट पीटर्सबर्ग संस्कृत शब्दकोश के निर्माण में भी उनका योगदान उल्लेखनीय रहा। अपने समय में उन्हें यूरोप के सर्वश्रेष्ठ संस्कृतविदों में गिना जाता था।

प्रो. अल्ब्रेट्र वेबर ने अपने अध्ययन से यह सिद्ध किया कि किसी संस्कृति को समझने के लिए उसके मूल ग्रंथों का निष्पक्ष अध्ययन अनिवार्य है। उन्होंने जैन आगमों और भारतीय ज्ञान-परम्परा को यूरोप के विश्व विद्यालयों तक पहुँचाकर जैन दर्शन के वैश्विक अध्ययन की मजबूत आधारशिला रखी।

भारत से हजारों किलोमीटर दूर रहकर भी उन्होंने जिस निष्ठा, धैर्य और बौद्धिक ईमानदारी के साथ जैन साहित्य का अध्ययन किया, वह उन्हें जैन दर्शन के विदेशी विद्वानों की अग्रिम पंक्ति में स्थापित करता है। जैन धर्म के अंतर्राष्ट्रीय अकादमिक अध्ययन के इतिहास में प्रो. अल्ब्रेट्र वेबर का नाम सदैव आदर और कृतज्ञता के साथ स्मरण किया जाएगा।

(पृष्ठ 1 का शेष 'शिव संदेश') न भूत काल की याद करो और न भविष्य की कल्पना लेकिन वर्तमान में स्थिर हो जाओ। इस सूत्र का यह भी अर्थ हो सकता है जो पंडित हैं, वे भूत काल की यादों में नहीं खोते और न ही भविष्य की कपोल कल्पनाओं में खोते हैं, अपितु वर्तमान में साधना करते हैं। भूतकाल को भूलने का अर्थ यह नहीं है कि आलोचना और प्रायश्चित भी नहीं करना। आलोचना और प्रायश्चित करना जरूरी है। लेकिन भूतकाल को याद कर शोक नहीं करते। लेकिन भूत एवं भविष्य के सम्बन्ध में राग-द्वेष, आर्त्त एवं रौद्र-ध्यान नहीं करना। भविष्य के बारे में दीर्घ-दृष्टि से सोचना एवं योग्य अवसर देखना भी जरूरी है। यहां पर जो अर्थ गर्भित है वह है, भूत एवं भविष्य में उलझने से व्यर्थ का ऊहापोह होता है। अतः इसमें उलझने की अपेक्षा जो भी सुयोग्य क्षण तुम्हारे पास मौजूद है उसका सम्यक् उपयोग कर साधना करो।

साधना में गतिशीलता के लिए क्या आवश्यक है ? : अरइ आउट्टे से मेहावी खणंसि मुक्के । साधना में गतिशीलता लाने के लिए घर-परिवार का त्याग आवश्यक है। घर-परिवार किस प्रकार बनता है? सम्बन्धों से। मुनि को किसी से भी सम्बन्ध नहीं रखना। जहां पर भी सम्बन्धों में उलझे कि साधना में डगमगाहट आ जाएगी।

जैसे-जैसे व्यक्ति साधना में आगे बढ़ता है वैसे-वैसे आस-पास लोग आते चले जाते हैं। अधिकांश लोग आते हैं अपने स्वार्थ के लिए और वे ही धीरे-धीरे साधना में बाधक बन जाते हैं। अतः सबसे सुंदर मार्ग है साधना के लिए एकान्त का। जहां पर भी योग्य द्रव्य, क्षेत्र, काल है वहां पर साधना करते रहें। किसी भी सम्बन्ध परिस्थिति और व्यक्ति में अधिक उलझना नहीं, सबको आशीर्वाद देना और अपना कार्य करते रहना। जहां पर भी इन्द्रियासक्ति आती है वहीं पर दुख और विघ्नों को निमंत्रण मिलता है।

प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक और नोबल पुरस्कार विजेताओं की स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा

बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज फीड मिल्स	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड	प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स

स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप

30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.

Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

महाराष्ट्र में जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारियों का तीन दिवसीय यात्रा प्रवास

संभाजीनगर (महाराष्ट्र) : जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अमितराय जैन के नेतृत्व में तीन दिवसीय संत-सती दर्शन यात्रा, महाराष्ट्र में संपन्न हुई। इस दर्शन यात्रा का शुभारंभ संभाजी नगर (औरंगाबाद) से हुआ। यहाँ विराजित पू. चैतन्यश्रीजी म. आदि ठाणा के दर्शन का लाभ सभी ने लिया। बदनापुर में महाराष्ट्र प्रवर्तिनी पू. श्री प्रतिभा जी म. आदि ठाणा के दर्शन किये। जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारियों की इस दर्शन यात्रा में विश्वस्त मंडल के चेयरमैन श्री रमेश भंडारी, राष्ट्रीय मंत्री श्री सुधीर जैन, पूर्व राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री शांतिलाल दुग्गड, चतुर्थ जोन प्रांतीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल लोढ़ा जैन, विहारधाम योजना राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कांतिलाल चोपड़ा, पंचम जोन प्रांतीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय युवा महामंत्री श्री अमित कुमार जैन, श्री नितिन बेदमुथा, श्री तनसुख झांबड आदि पदाधिकारी शामिल थे। यहां से जैन कॉन्फ्रेंस अल्पसंख्यक योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन के निवास पर आयोजित स्नेह मिलन में प्रतिनिधि मण्डल ने भाग लिया। देर शाम जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय मंत्री श्री वसंतलाल लोढ़ा जैन के निवास पर आयोजित स्नेह मिलन में प्रतिनिधि मण्डल ने सहभागिता की।

अहिल्यानगर (अहमदनगर) में 13 अगस्त को श्रमण संघीय उपाध्याय पू. श्री प्रवीणऋषिजी म., महाराष्ट्र प्रवर्तक पू. श्री कुंदनऋषिजी म. आदि संतों के प्रवचन तथा दर्शन का लाभ लिया तथा करीब 3600 अठाई महोत्सव में सभी शामिल हुए। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सतीश बाबूसेठ लोढ़ा के निवास स्थान पर आयोजित स्नेह मिलन में सभी शामिल हुए। इसके पश्चात लोढ़ा निवास पर आयोजित तप महोत्सव में सहभागिता करते हुए प्रतिनिधि मण्डल अहिल्यानगर के मुख्य मार्ग पर स्थित आचार्य शिवमुनि जैन इंग्लिश मीडिया स्कूल के संस्थापक श्री आनंद कटारिया जैन के निवेदन पर स्कूल के विद्यार्थियों के मध्य पहुंचे और नोटबुक का वितरण किया। उसके पश्चात शिरूर में विश्वस्त मंडल सदस्य श्री सुनील बाफना जैन वरिष्ठ सदस्य श्री संजय जी बाफना जैन की माताजी का स्वर्गवास होने पर परिवार को सांत्वना देने हेतु शिष्टमंडल शिरूर (घोडनदी) में पहुँचा। घोडनदी में जैन स्थानक में विराजमान साध्वी श्री आभाश्री जी म. के दर्शन का लाभ प्रतिनिधि मण्डल ने लिया। शाम को राजगुरु नगर में आनंद शिष्यरत्न पू. श्री प्रशांतऋषि जी म., मधुर कंठी पू. श्री मधुस्मिताजी म. एवं विजयस्मिताजी म. के दर्शन किए तथा उनके साथ धार्मिक चर्चा की।

इस अवसर पर हर प्रांत जैन भवन योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार पगारिया जैन के साथ शामिल हुए। संघ के अध्यक्ष अजय बलदोटा, पूर्व अध्यक्ष संतोष बोथरा, प्रकाश गदिया आदि ने स्वागत किया। वहां से निकलकर प्रतिनिधि मण्डल चिंचवड (पुणे) में जैन कॉन्फ्रेंस जीवदया योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मनोहर लोढ़ा जैन के स्वास्थ्य की शुभकामना हेतु पहुंचा। अगले दिन श्रमण संघीय सलाहकार पू. श्री रमणीक मुनि जी म. तथा साध्वी रत्न पू. श्री हिमानी जी म. आदि संत-सतियों के प्रवचन में, साधना सदन के शिव शंकर सभागृह में पहुंचकर सभी ने धर्म लाभ लिया। यहां पर श्री विजयकांत कोठारी, श्री विजय धोका, श्री आदेश खिंवसरा आदि ने सभी का स्वागत किया। पुणे में विराजित सभी संत-सतियों के दर्शन करने हेतु शिष्ट मण्डल पहुंचा। कोंढवा में पुष्कर भवन में पू. श्री नरेशमुनि जी म. आदि संत-संतियों के दर्शन किए तथा धर्म चर्चा हुई। बिबवेवाडी जैन श्रावक संघ में यश लॉंस जैन स्थानक में शिष्टमंडल पहुंचा वहां पर पू. श्री जयश्री जी म. आदि ठाणे का दर्शन किया। श्रमणसंघ की संघ स्थिति पर विस्तृत चर्चा हुई। डॉ. अमितराय जैन ने जैन कॉन्फ्रेंस की भूमिका स्पष्ट करते हुए महासती जी के सुझावों का स्वागत किया। इस अवसर पर संघ अध्यक्ष श्री पोपटलाल ओस्तवाल, श्री माणिकचंद दुग्गड आदि ने सभी का स्वागत किया। इसके पश्चात सभी पदाधिकारी आदिनाथ सोसायटी जैन स्थानक में पहुंचे जहां पू. श्री चंद्रकला जी म. आदि सतियों के दर्शन किए। यहां पर संघ के अध्यक्ष निलेश मुथा, संजय सांकला तथा उनके साथियों ने शिष्टमंडल का स्वागत किया। इसके पश्चात सभी लोग सादड़ी सदन में पू. श्री लोकेशऋषि जी म. के दर्शन के कर कोथरुड में पू. श्री अभिषेक मुनि जी म. आदि संत-सतियों के दर्शन सभी ने किये। शिवाजी नगर वर्धमान प्रतिष्ठान में महासती जी मधुर भाषी डॉ. अनुपमाजी म., पू. श्री जिनेश्वराजी म. आदि के दर्शन कर आशीर्वाद लिया। उसके पश्चात डॉ. अनुपमा जी, पू. श्री जिनेश्वरा जी आदि सतियों के दर्शन किए। संघ के अध्यक्ष श्री विलास राठौड़ ने सभी का स्वागत किया और धार्मिक ग्रंथालय के बारें में जानकारी दें। अंत में सभी लोग चिंचवड में विराजित पू. श्री सुप्रियदर्शनाजी म., पू. श्री नियमदर्शना जी म. आदि साध्वियों के दर्शन हेतु चिंचवड़ गांव में पहुंचे। उसके पश्चात चिंचवड़ स्टेशन में विराजित पू. श्री विचक्षणाजी म. एवं श्री संकल्पदर्शना जी म. के दर्शन हेतु सभी पहुंचे। इस संत दर्शन यात्रा में पंचम जोन के युवा अध्यक्ष श्री देवेंद्र पारख, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य अतुल चोरडिया, सुवालाल बोरा जैन, कीर्ति दुग्गड़ जैन, नितिन चोपड़ा जैन आदि सदस्य भी शामिल हुए। इस तरह तीन दिवसीय प्रवास यात्रा संत दर्शन यात्रा राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अमितराय जैन के नेतृत्व में सुचारू रूप से संपन्न हुई।

प्रेषक : अशोक पगारिया जैन

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय') **दो अतियों से बचना होगा :** हमारे साधु-संतों और विभिन्न परंपराओं की अपनी-अपनी आचार-पद्धतियाँ हैं। यह विविधता अपने आप में दोष नहीं है। किंतु एक ओर ऐसी कठोरता, जो संवाद के द्वार ही बंद कर दे और दूसरी ओर ऐसी कृत्रिम आधुनिकता, जिसमें मौलिक जैन अस्मिता ही धूमिल हो जाए-नई पीढ़ी दोनों को सहजता से स्वीकार नहीं करेगी। Gen-Z को चाहिए प्रामाणिकता। उसे ऐसा साधु चाहिए जो साधु ही रहे, किंतु उसके प्रश्न से भयभीत न हो। ऐसा संत चाहिए जो आगम का मर्म जानता हो और वर्तमान युग की मनोभूमि को भी समझता हो। ऐसा प्रवचन चाहिए जिसमें शास्त्र की गंभीरता हो और भाषा में आज के युवा तक पहुँचने की शक्ति।

स्थानक को संवाद-केंद्र बनाना होगा : समय आ गया है कि हमारे स्थानक केवल प्रवचन और धार्मिक अनुष्ठानों के स्थल न रहें, बल्कि जैन जीवन-दर्शन के आधुनिक संवाद-केंद्र बनें। युवा संवाद हो। प्रश्नोत्तर मंच हों। जैन दर्शन और विज्ञान, अहिंसा और पर्यावरण, अपरिग्रह और उपभोक्तावाद, ध्यान और मानसिक एकाग्रता, जैन दर्शन और आधुनिक तकनीक जैसे विषयों पर विमर्श हो।

युवा निर्भीक होकर पूछ सके-'आज के युग में अपरिग्रह का अर्थ क्या है?', 'सोशल मीडिया के युग में संयम कैसे जिया जाए?', 'करियर की स्पर्धा में संतुलित जीवन कैसे संभव है?', 'मैं आधुनिक भी रहूँ और जैन भी-यह कैसे संभव है?' और उसके सामने कोई ऐसा साधु हो, जो इन प्रश्नों को असम्मान नहीं, जिज्ञासा माने। स्थानकों में आवश्यकता के अनुसार पुस्तकालय, अध्ययन-कक्ष, डिजिटल ज्ञान-संसाधन और युवा गतिविधियों के लिए सुविधाएँ विकसित की जा सकती हैं। यह सुविधाभोग नहीं, धर्म-संवाद की आधारभूत संरचना होगी।

साधु समाज ही नहीं, श्रावक समाज भी उत्तरदायी है : यह दायित्व केवल साधु-साध्वी समाज का नहीं है। माता-पिता को भी बच्चों से धर्म पर संवाद करना होगा। केवल यह कहना पर्याप्त नहीं कि-'यह मत करो, जैन धर्म में मना है।' हमें कभी यह भी कहना होगा-'आओ, समझें कि जैन धर्म ने ऐसा क्यों कहा।' धर्म यदि केवल अनुशासन बनकर रहेगा तो दूरी उत्पन्न कर सकता है, किंतु धर्म यदि विचार, करुणा और आत्मबोध बनकर घर में उपस्थित होगा, तो वही बालक-बालिका भविष्य में धर्म के सबसे समर्थ वाहक बनेंगे।

नई पीढ़ी को 'साधना' नहीं, समझना होगा : युवा कोई अनुयायी-सूची नहीं है। वह कोई संख्या नहीं है। वह हमारी परंपरा का भावी संवाहक है। उसे नियंत्रित करने से पहले सुनना होगा। उसे सुधारने से पहले समझना होगा। उसे उपदेश देने से पहले उसके प्रश्न को पहचानना होगा। हमारे पास भगवान महावीर का कालजयी दर्शन है। अहिंसा, अनेकांत, अपरिग्रह और आत्मसंयम जैसे सिद्धांत आज के अशांत, उपभोगवादी और तनावग्रस्त विश्व को पहले से कहीं अधिक आवश्यक हैं। अतः समस्या हमारे सिद्धांतों में नहीं है। समस्या कहीं-कहीं सिद्धांत और नई पीढ़ी के बीच टूटते संवाद के सेतु में है। जंतर-मंतर की Gen-Z ने देश को संकेत दिया है-नई पीढ़ी को अनदेखा मत कीजिए।

अब जैन समाज की बारी है। हमें अपनी Gen-Z को रोकना नहीं है। उसे खोना नहीं है। उसे केवल प्रवचन देना भी नहीं है। हमें उसके साथ चलना है-उसके प्रश्नों के बीच, उसके समय के भीतर और महावीर के प्रकाश के साथ। क्योंकि परंपरा तभी जीवित रहती है, जब अगली पीढ़ी उसे केवल विरासत में प्राप्त नहीं करती, बल्कि उसे अपने जीवन में पुनः खोजती है। जैन समाज का भविष्य केवल हमारे स्थानकों में नहीं, बल्कि हमारे स्थानकों और हमारी नई पीढ़ी के बीच निर्मित होने वाले जीवंत संवाद में सुरक्षित है।

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain

R.Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस
9444204046
E mail : rmrjainplr@gmail.com

JAIN JEWELLERY
916 HALL MARK SHOWROOM
POLUR
JAIN SILKS & READYMADES
POLUR
varnalaya
JAIN PETRO
OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR

M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

अशोक विहार, दिल्ली में गुरु प्रेमसुख पुण्य स्मृति महोत्सव में सवा करोड़ महामंत्रों की गूँज

अशोक विहार, दिल्ली : 9 अगस्त को गरीबों के मसीहा, शान-ए-जिनशासन, परम सेवाभावी एवं चमत्कारी महामुनि आराध्य गुरुदेव श्री प्रेमसुख जी म. की 29वीं महापुण्य स्मृति के पावन अवसर पर दिल्ली के अशोक विहार स्थित रामलीला ग्राउंड में आयोजित 'विश्व शान्ति जैन महायज्ञ' अभूतपूर्व ऐतिहासिक सफलता और भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। इस अलौकिक महा आयोजन में दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, पंजाब, उत्तराखण्ड, जम्मू और राजस्थान सहित देशभर से हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लेकर धर्मलाभ प्राप्त किया।

शास्त्री श्री उपेन्द्र मुनि जी म. की पावन प्रेरणा से आयोजित इस महायज्ञ का मुख्य उद्देश्य 'विश्व शांति' रहा। महामंत्र "ॐ अ सि आ उ सा नमः" के सवा करोड़ जपों की पावन ध्वनि से संपूर्ण वातावरण भक्तिमय एवं दिव्य ऊर्जा से ओत-प्रोत हो उठा।

इस अवसर पर श्रमण संघीय उपाध्याय प्रवर श्री रवीन्द्र मुनि जी म.सा., वाचनाचार्य उपाध्याय डॉ. श्री विशाल मुनि जी म., उपप्रवर्तक डॉ. श्री सतीश मुनि जी म., उपप्रवर्तक श्री पंकज मुनि जी म., प्रवचन भास्कर श्री रितेश मुनि जी म., व्याख्यान वाचस्पति श्री सुखदर्शन मुनि जी म., मधुरवक्ता श्री महादेव मुनि जी म., मधुरवक्ता श्री इन्द्रेश मुनि जी म., युवावक्ता श्री सहदेव मुनि जी म. आदि ठाणा, उपप्रवर्तिनी महासाध्वी श्री रश्मि जी म., पंजाब वीरांगना महासाध्वी श्री किरण जी म., उपप्रवर्तिनी महासाध्वी श्री वंदना जी म. एवं आगम ज्ञानार्थी महासाध्वी डॉ. श्री शैली जी म. आदि ठाणा का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। पूज्य शास्त्री श्री उपेन्द्र मुनि म. ने गुरुदेव के त्यागमयी, निष्काम सेवा जीवन, पंच महाव्रतों के पालन, असहायों को सहारा देने और शिक्षा के क्षेत्र में उनके अभूतपूर्व योगदान पर विस्तृत प्रकाश डाला।

महिला जगत

जैन क्रान्फ्रेंस महिला शाखा द्वारा तीज के रंग में सजा हुनर का मंच

दिल्ली : 8 अगस्त 2026 को श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के तत्वावधान में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान अतुल जैन और राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष श्रीमती संतोष जैन के मार्गदर्शन में तीज हुनर मंगलम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का संयोजन राष्ट्रीय महिला कोषाध्यक्ष श्रीमती उर्मिल जैन, प्रांतीय महिला शाखा अध्यक्ष श्रीमती सीमा जैन, महामंत्री श्रीमती कनिका जैन एवं संयोजिका श्रीमती शालू जैन द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में हस्तशिल्प उत्पाद एवं स्वदेशी उत्पादों की प्रदर्शनी लगाई गई, बहनों के लिए निःशुल्क मेहंदी एवं नेल आर्ट की व्यवस्था की गई, सैकड़ों बहनों ने इसमें सहभागिता दिखाई। तीज का उत्सव अपनी बेटियों, बहनों और ननदों को सौगात देने का पावन पर्व है। मेहंदी से रचे हाथों और पारंपरिक गीतों ने इस उत्सव में चार चाँद लगा दिए। इस अवसर पर उत्तर पश्चिम लोकसभा के सांसद श्रीमान योगेन्द्र चंदोलिया, जिला अध्यक्ष श्री विनोद सहरावत, रोहिणी के निगम पार्षद श्री धर्मवीर शर्मा जी, शालीमार बाग की निगम पार्षद अनीता जी उपस्थित रही।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय पदाधिकारीगण श्री जसवंत जैन, श्री नरेश कुमार जैन, श्री महावीर प्रसाद जैन, श्री जयकुमार जैन, श्री सत्यनारायण जैन, श्री सुरेश कुमार जैन हरियाणा परिवार के पदाधिकारीगण उपस्थित रहे। प्रेषक : कनिका जैन

युवा जगत

बच्चों को धर्म से जोड़ने की अनूठी पहल- 'गुड लक अकाउंट योजना' का शुभारंभ

चेन्नई (तमिलनाडु) : दिनांक 9 अगस्त को तमिलनाडु राष्ट्रीय एवं प्रांतीय युवा शाखा द्वारा चातुर्मास 2026 के शुभ अवसर पर बच्चों को धार्मिक नियमों एवं संस्कारों से जोड़ने के उद्देश्य से 'गुड लक अकाउंट योजना' का शुभारंभ किया गया। यह योजना विशेष रूप से 5 से 15 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के लिए तैयार की गई है। योजना का शुभारंभ पूज्य उपप्रवर्तक श्री श्रुतमुनि जी म. ठाणा 4 के पावन सान्निध्य में, श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संघ, मैलापुर के तत्वावधान में किया गया। पूज्यश्री ने इस पहल की प्रशंसा करते हुए कहा इससे बच्चों का उत्साहवर्धन होगा तथा और अधिक जुड़ने की प्रेरणा मिलेगी।

इस अभिनव पहल के अंतर्गत बच्चों को विभिन्न धार्मिक नियमों जैसे सामायिक, प्रतिक्रमण, अभिवादन, रात्रि भोजन त्याग आदिका पालन करने पर पूर्व निर्धारित पॉइंट कूपन प्रदान किए जाएंगे। विभिन्न नियमों के लिए 5 से 200 तक पॉइंट्स निर्धारित किए गए हैं। बच्चों द्वारा इन नियमों का नियमित रूप से पालन करने पर उनके 'गुड लक अकाउंट' में पॉइंट्स जोड़े जाएंगे। योजना की अवधि पूर्ण होने पर पॉइंट्स अर्जित करने वाले बच्चों को उनकी मेरीट के आधार पर सार्वजनिक रूप से सम्मानित एवं पुरस्कृत किया जाएगा। इस योजना का मुख्य उद्देश्य बच्चों को जिनशासन की मूल शिक्षाओं से जोड़ना, उनमें धार्मिक जागरूकता उत्पन्न करना, अच्छे संस्कार विकसित करना तथा संयमित एवं अनुशासित जीवनशैली के प्रति रुचि बढ़ाना है। मैलापुर में वर्तमान में बाल शिविर में 200 बच्चों की उपस्थिति है तथा सभी को नियमों की जानकारी दी गई। यह पहल बच्चों के हाथों में केवल पॉइंट्स नहीं, बल्कि संस्कारों और धर्म की मजबूत नींव सौंपने का एक प्रयास है। प्रेषक : गौतमचंद दुग्गड़ जैन

दिल्ली में वयोवृद्ध श्राविका श्रीमती गंगा जैन का राष्ट्रीय महिला शाखा द्वारा स्वागत अभिनंदन

दिल्ली : जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली की राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष श्रीमती संतोष जैन, राष्ट्रीय महिला कोषाध्यक्ष श्रीमती उर्मिल जैन, सह कोषाध्यक्ष श्रीमती कौशल्या जैन दिल्ली प्रांतीय अध्यक्ष श्रीमती सीमा जैन दिल्ली प्रांतीय महामंत्री कनिका जैन के साथ सूर्य अपार्टमेंट रोहिणी में कार्यकारी महामंत्री श्रीमती नीलम जैन की 100 वर्षीय सासू माँ श्रीमती गंगा जैन का स्वागत अभिनंदन करने के लिए उनके निवास स्थान पर गए। माताजी का आशीर्वाद लिया उनकी ममता, अपनत्व, उनका मिलनसार व्यवहार और अपनी मातृभाषा में बातें कर अपने हरियाणा की याद आ गई। उनके पुत्र और पुत्रवधू श्री हरिकिशन जैन-श्रीमती अनीता जैन, श्री जयकिशन जैन-श्रीमती अंजू जैन, श्री प्रवीण जैन-श्रीमती नीलम जैन बेटियां श्रीमती त्रिशला जैन एवं श्रीमती सरला जैन एवं पौत्र सार्थक जैन के साथ माता जी का जन्मदिन भी मनाया। माता जी के उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु की मंगल कामना करते हैं।

प्रेषक : संतोष जैन

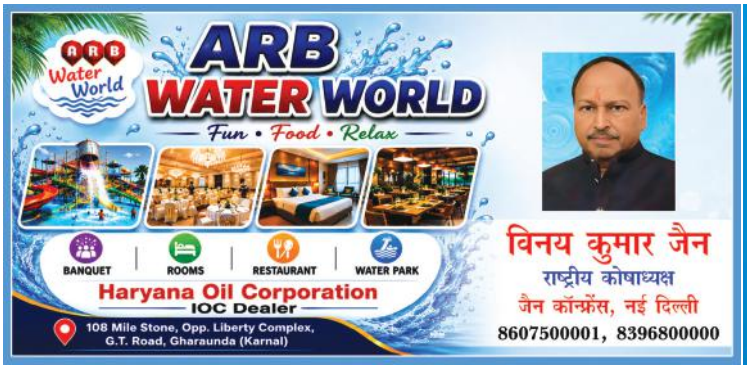

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

सम्पूर्ण देश में गुरु आनंद जन्मोत्सव विशेष

सूरत में मनाया गया आनंद जन्मोत्सव

सूरत (गुजरात) : आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. के सान्निध्य में श्रमण संघ के द्वितीय पट्टधर आचार्य सम्राट पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.सा. की जन्म जयन्ती का आयोजन हुआ। जन्म जयन्ती के अवसर पर आचार्यश्री जी ने अपने उद्‌बोधन में फरमाया कि हम सभी युगपुरुष का जन्मोत्सव मना रहे हैं, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन देश और संघ-समाज के लिए समर्पित कर दिया। जिस तरह से मिश्री और नमक दोनों का रंग एक समान है किंतु उनका स्वभाव अलग है जैसे मिश्री कभी नमक नहीं हो सकती और नमक कभी मिश्री नहीं हो सकता इसी तरह आचार्य आनन्द ऋषि जी महाराज जिनके नाम में ही नहीं स्वभाव में भी आनन्द था।

प्रमुख मंत्री श्री शिरीष मुनि जी म.सा. ने अपने उद्‌बोधन में फरमाया कि आचार्य श्री आनन्दऋषि जी म.सा. ने अपने शरीर के माध्यम से श्रमण संघ को नई दिशा प्रदान की इसलिए उनके जन्म जयंती पर हम कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। युवा मनीषी श्री शुभम मुनि जी म.सा. "वंदन तुमको वंदन, गुरु आनन्दऋषि उपकारी" मधुर गायक श्री निशांत मुनि जी म.सा. ने "बोलो-बोलो जयकार गुरुवर आनन्द की" श्री शमित मुनि जी म.सा. "जाने जिनको सारा जहां महिमा जिनकी थी सबसे महान" श्री शाश्वत मुनि जी म.सा. ने "आओ भगवन आओ, इस अंतर मन में आओ" भजन के द्वारा अपनी भावनाएं व्यक्त की। ऑनलाईन के माध्यम से उपवास, एकासन, आयंबिल का तप करने वाले तपस्वियों ने प्रत्याख्यान लिये।

भीलवाड़ा में आचार्य आनंदऋषिजी की जीवनगाथा का गुणगान

जन्मजयंती पर 1008 से अधिक आयंबिल तप की भव्य भेंट अर्पित

भीलवाड़ा (राजस्थान) : राष्ट्रसंत आचार्य सम्राट आनंदऋषिजी महाराज की 127वीं जन्म जयंती शांतिभवन में श्रमण संघीय युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेन्द्रऋषिजी, यशोदिप्ती मधुकंवरजी, उप-प्रवर्तिनी दिव्यज्योतिजी, महासती सुचेताजी, स्मितभाषी प्रियदर्शनाजी सहित संत-साध्वीवृंद के सान्निध्य में मनाई गई। इस अवसर पर तपस्वी भाई-बहनों ने सामूहिक रूप से 1008 आयंबिल तप की आराधना कर आचार्यश्री के चरणों में तप की भेंट अर्पित की।

जन्मजयंती गुणगान समारोह में युवाचार्यश्री ने आचार्य आनंदऋषिजी के व्यक्तित्व और संयममय जीवन का उल्लेख करते हुए कहा कि व्यक्तित्व की वास्तविक पहचान बाहरी रूप से नहीं, बल्कि भीतर की शुचिता, शील और आचरण से होती है। आचार्यश्री की जीवनशैली में स्वच्छता केवल शरीर और वस्त्रों तक सीमित नहीं थी। उनके व्यवहार में सदाचार की सुगंध, विचारों में निर्मलता और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति मंगलभाव सहज दिखाई देता था। उनका चलना, बैठना और व्यवहार भी उनके अंतरंग व्यक्तित्व की गरिमा को प्रकट करता था। उस महापुरुष के चरण जहां-जहां पड़े, वहां की रज तक लोगों ने श्रद्धा से सुरक्षित रखी। उनके प्रति यह गहरी आस्था उनके पवित्र आचरण और संयममय जीवन की ही अभिव्यक्ति थी।

इस अवसर पर हितमितभाषी हितेंद्रऋषि जी, महासती प्रियदर्शनाजी, विदुषी सुप्रभाजी, साध्वी चिंतनश्रीजी, साध्वी काव्याश्रीजी एवं यश सुशिष्या सुप्रभाजी आदि ने भजन एवं विचारों के माध्यम से आचार्यश्री के जीवन का स्मरण करते हुए कहा कि आचार्यश्री शरीर रूप में भले हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनके संस्कार, विचार और गुण आज भी समाज को दिशा दे रहे हैं।

इस दौरान साध्वी नाव्याश्रीजी के 11 उपवास पूर्ण होने पर युवाचार्यश्री जी ने उन्हें आदर की चादर प्रदान कर तप की अनुमोदना की। शांतिभवन के अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद चीपड़ एवं मंत्री नवरतनमल भलावत ने बताया कि जन्म जयंती समारोह में 1008 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं ने युवाचार्यश्री से आयंबिल तप के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। आचार्य आनंदऋषिजी महाराज की जन्म जयंती पर हुई इस सामूहिक तप आयंबिल के लाभार्थी नवरतनमल बंब का श्रीसंघ की ओर से अभिनंदन किया गया। तथा तपस्यार्थियों के तप की सामूहिक रुप अनुमोदना की गई। प्रेषक : सुनील चपलोत जैन

हैदराबाद में मनाया गया आनंद जन्मोत्सव

हैदराबाद (तेलंगाना) : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ खैरताबाद एवं श्री मरूधर केसरी रूप सुकन चातुर्मास समिति त्रयनगर के तत्वावधान में प्रवर्तक पू. गुरुदेव श्री रूपचंदजी म. के शिष्य, युवा तपस्वी श्री मुकेशमुनिजी म. के सान्निध्य श्रमण संघ के द्वितीय पट्टधर आचार्य सम्राट आनंदऋषिजी म. के 127वें जन्मदिवस के अवसर पर गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया।

धर्मसभा में प्रज्ञारत्न श्री हितेशमुनिजी म.सा. भी अपने भाव व्यक्त किए। धर्मसभा में खैरताबाद श्रीसंघ के अध्यक्ष शांतिलाल भलगट, प्रकाशचंदजी कटारिया, सोहनलालजी गुगलिया, धर्मीचंदजी बोहरा, महावीरचंदजी भलगट आदि उपस्थित थे। प्रेषक : रणजीतमल गुन्देचा जैन

एकासना तप अराधना से मनाया गया आचार्य व उपाध्याय जन्मोत्सव

चेन्नई (तमिलनाडु) : 13 अगस्त गुरुवार लक्ष्मी महल चेन्नई में ओजस्वी वक्ता पू. श्री कपिलमुनि जी म. के सान्निध्य में श्रमण संघीय द्वितीय आचार्य पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म. व उपाध्याय कवि रत्न श्री केवलमुनि जी म. का जन्मोत्सव सामूहिक एकासना, दो-दो सामायिक अराधना के साथ मनाया गया। पूज्यश्री ने इस जन्मोत्सव पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आचार्य आनन्दऋषि जी म. किसी संप्रदाय के आचार्य नहीं थे। उनके लिखे साहित्य आज भी हमारी प्रेरणा स्त्रोत है। इस अवसर पर करीब 150 एकासना हुए। कार्यक्रम में जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनन्दमल छल्लाणी जैन सहित शहर के गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

कोप्पल में तेरापंथ संघ के मुनियों के सान्निध्य में आनंद जयंती मनाई गई

कोप्पल (कर्नाटक) : युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के शिष्य मुनि श्री अनंत कुमार जी म. के सान्निध्य में श्रमण संघ के द्वितीय आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषि म. सा. की 127वीं जन्म जयंती का आयोजन हुआ। मुनिश्री अनंत कुमार जी ने अपने प्रभावी प्रवचन में फरमाया कि इतिहास को पढ़ते हैं तो पता लगता है कि आचार्य श्री आनंदऋषि जी महाराज साहब बचपन से ही एक स्थिर योगी थे। लोग उन्हें वैदिक जगत के गुरु एवं जैन जगत के एवंता कुमार का दूसरा रूप कहते थे। 9 वर्ष में पिता मृत्यु एवं तांगे से स्वयं गिरने की घटना से भीतर में वैराग्य जागा और रत्नऋषि गुरु के पास दीक्षित हो गए। मुनिश्री ने आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ जी और आचार्य महाश्रमण जी के साथ श्रमण संघ का जो अपना परस्पर सौहार्द, प्रेम है उनके अनेक संस्मरणों के माध्यम से बताया। वर्तमान आचार्य सम्राट् पू. डॉ. शिवमुनि जी महाराज एवं आचार्य महाश्रमण जी का दो वर्ष पूर्व सूरत सिटी लाइट में जो आध्यात्मिक मिलन हुआ था अपने आप में एक अपूर्व घटना बताई।

कार्यक्रम में मुनि श्री जैनम कुमार जी ने भगवान महावीर की स्तुति की। पाठशाला के बच्चों ने आनंद स्तुति, शीतल चोपड़ा महेंद्र लुंकड ने आचार्य आनंदऋषि जी के जीवन पर प्रकाश डाला। सीमा चोपड़ा एवं त्रिशला चोपड़ा ने सुमधुर गीत के माध्यम से और चंदनबाला महिला मंडल की बहनों ने भावपूर्ण गीत के साथ अपनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत की। मरुधर संघ के अध्यक्ष महेंद्र चोपड़ा ने आचार्य आनंदऋषि जी महाराज साहब को जन प्रभावी आचार्य के रूप में बताया।

अहिल्यानगर-प्रवर्तक पूज्य श्री कुंदनऋषि जी म. उपाध्याय पूज्य श्री प्रवीणऋषि जी म.,

उदयपुर-उपाध्याय पूज्य श्री रमेश मुनि जी म., प्रवर्तक पूज्य श्री राजेन्द्र मुनि जी म.

उधना (सूरत)-महासाध्वी पूज्य श्री चेतना जी म.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U(C)-312/2026-28

Date of Publication : 15-08-2026
Date of Posting : 21/22-08-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

भाषा : हिन्दी ✲ अंक : 23 ✲ पृष्ठ : 8
माह : अगस्त ✲ सप्ताह : 15 अगस्त से 21 अगस्त

मूल्य : ₹ 10

सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुग्गड़ जैन-चेन्नई

स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के गौरवशाली महापुरुष श्रृंखला...

डॉ. दौलत सिंह कोठारी जैन : विज्ञान के शिखर पर जैन संस्कारों का प्रकाश !

- प्रो. डॉ. अमितराय जैन

'भारत के महान वैज्ञानिक, शिक्षा-द्रष्टा, रक्षा-विज्ञान के शिल्पी और स्थानकवासी जैन समाज के गौरवशाली पूर्व राष्ट्राध्यक्ष डॉ. दौलत सिंह कोठारी जैन का जीवन ज्ञान, राष्ट्रसेवा, विनय और आत्मानुशासन का अद्भुत समन्वय था।'

राजस्थान के उदयपुर में 6 जुलाई 1906 को प्रतिष्ठित जैन श्रावक परिवार में जन्मे डॉ. कोठारी जी ने प्रारंभिक शिक्षा उदयपुर एवं इंदौर में प्राप्त की। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में महान वैज्ञानिक प्रो. मेघनाद साहा के सान्निध्य में उनकी वैज्ञानिक प्रतिभा का विकास हुआ। आगे कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में शोध करते हुए उन्होंने विश्वविख्यात वैज्ञानिकों के साथ कार्य किया और भारत लौटकर दिल्ली विश्वविद्यालय को अपने अध्यापन एवं अनुसंधान से नई प्रतिष्ठा प्रदान की।

भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में उनके अनुसंधान ने उन्हें अंतर्राष्ट्रीय ख्याति दिलाई। सांख्यिकीय ऊष्मागतिकी, दाब-आयनीकरण तथा तारकीय पदार्थ और श्वेत-बौने तारों से संबंधित उनके शोध विशेष रूप से उल्लेखनीय रहे। किंतु उनकी प्रतिभा प्रयोगशाला तक सीमित नहीं रही-उन्होंने विज्ञान को राष्ट्रनिर्माण का माध्यम बना दिया।

राष्ट्र के वैज्ञानिक शिल्पी : स्वतंत्र भारत के प्रारंभिक वर्षों में डॉ. कोठारी भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के वैज्ञानिक सलाहकार रहे और 1948 से 1961 तक देश की रक्षा-विज्ञान व्यवस्था को सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्हें भारतीय रक्षा-विज्ञान के प्रमुख शिल्पियों में गिना जाता है।

वे दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति रहे तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष के रूप में भी उन्होंने उच्च शिक्षा को नई दिशा दी। राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस और भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी जैसे शीर्ष वैज्ञानिक मंचों का नेतृत्व भी उन्होंने किया।

परंतु भारतीय शिक्षा-जगत् में उनकी सर्वाधिक स्थायी पहचान 1964-66 के शिक्षा आयोग के अध्यक्ष-'कोठारी आयोग' के अध्यक्ष-के रूप में हुई। इस आयोग ने प्राथमिक शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय तक भारतीय शिक्षा-व्यवस्था का व्यापक पुनरावलोकन किया। उसकी अनुशंसाओं ने 1968 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति को गहरी दिशा प्रदान की। विज्ञान-शिक्षा, समान अवसर, शिक्षक-प्रशिक्षण, स्त्री-शिक्षा और शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय एकता जैसे विषयों पर आयोग की दृष्टि दूरगामी थी।

सम्मानों से बड़ा उनका व्यक्तित्व : राष्ट्र ने उनके योगदान को पद्म भूषण (1962) और पद्म विभूषण (1973) से सम्मानित किया। उनकी स्मृति को राष्ट्रीय सम्मान देते हुए भारत सरकार के डाक विभाग ने 6 जुलाई 2011 को उनके जन्मदिवस पर उनके सम्मान में स्मारक डाक टिकट भी जारी किया। किन्तु इन विराट उपलब्धियों के मध्य उनका निजी जीवन अत्यंत सरल, सहज और विनम्र रहा।

वैज्ञानिक शिखर से जैन स्थानक की शांति तक : डॉ. कोठारी स्थानकवासी जैन परंपरा के संस्कारों में गहरे अनुरक्त थे। दिल्ली में अत्यंत व्यस्त राष्ट्रीय दायित्वों के बीच भी वे कमला नगर, कोल्हापुर रोड स्थित जैन स्थानक में समय-समय पर वहां पर विराजमान साधु - साध्वियों के प्रवचन सभा में सामायिक किया करते थे। जहाँ अवसर मिला, वहाँ स्थानक जाकर सामायिक करना उनके जीवन का सहज अंग था। एक ओर देश के शीर्ष वैज्ञानिक और शिक्षाविद् उनसे मार्गदर्शन लेते थे, दूसरी ओर वे जैन स्थानक की पावन भूमि पर एक सामान्य श्रावक की भाँति सामायिक में लीन हो जाते थे। यही उनके व्यक्तित्व की वास्तविक ऊँचाई थी।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में भी उनका योगदान समाज के लिए गौरव का विषय रहा। उन्होंने सिद्ध किया कि जैन संस्कार आधुनिक विज्ञान और राष्ट्रसेवा के मार्ग में बाधा नहीं, बल्कि उसके नैतिक आधार बन सकते हैं। राष्ट्रीय अध्यक्ष के पद पर रहते हुए डॉ. कोठारी जी ने अपनी निजी पुस्तकालय में से सैकड़ों पुस्तकें जैन भवन पुस्तकालय को भेंट स्वरूप प्रदान की जो आज भी यहां की शोभा बढ़ा रही है।

बड़ौत की कन्या-शिक्षा में प्रेरक भूमिका : सन् 1970 में पूज्य आचार्य सम्राट् श्री आनंदऋषि जी महाराज के धर्म नगरी बड़ौत चातुर्मास के दौरान डॉ. कोठारी आनंद जयंती समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। उस समय जैन स्थानकवासी कन्या विद्यालय शिक्षा सोसायटी के अध्यक्ष लाला शहजाद राय जैन थे। उनके नेतृत्व में संचालित जैन स्थानकवासी गर्ल्स इंटर कॉलेज को उच्च शिक्षा का स्वरूप देने की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। डॉ. कोठारी ने तत्काल मेरठ विश्वविद्यालय के कुलपति को बड़ौत बुलाकर संस्था को महाविद्यालय का स्वरूप का आदेश दिया। उस समय स्त्री-शिक्षा का अभाव देखते हुए यह कदम अत्यंत दूरदर्शी था। इस प्रकार आचार्य श्री आनंदऋषि जी की प्रेरणा, लाला शाहजाद राय जैन की शिक्षा-निष्ठा और डॉ. कोठारी की राष्ट्रीय शैक्षिक दृष्टि ने बड़ौत में कन्या-शिक्षा के एक नए अध्याय का सूत्रपात किया।

डॉ. दौलत सिंह कोठारी केवल एक महान वैज्ञानिक नहीं थे। वे विज्ञान के साधक, शिक्षा के द्रष्टा, राष्ट्र के निर्माता और जैन संस्कारों के विनम्र साधक थे। उनका जीवन मानो यह उद्घोष करता है-'ज्ञान जितना ऊँचा हो, विनय उतनी ही गहरी हो, उपलब्धियाँ जितनी विराट हों, आत्मा उतनी ही सरल रहे।' श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के इस गौरवशाली पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष का जीवन भारतीय विज्ञान, शिक्षा और स्थानकवासी जैन समाज-तीनों की सामूहिक स्मृति में सदैव उज्ज्वल रहेगा।

(शहजाद राय शोध संस्थान, बड़ौत में संग्रहित दुर्लभ दस्तावेजों के आधार पर)

जैन गौरव

राजा बाई जैन क्लॉक टावर, मुम्बई

राजा बाई जैन क्लॉक टावर एक जैन संकल्प का स्मारक है। यह टॉवर मुम्बई विश्व विद्यालय परिसर में स्थित है। इसका निर्माण प्रसिद्ध उद्योगपति रायचन्द्र प्रेमचन्द्र जैन ने सन् 1878 में दो लाख रुपये की लागत से बनवाया था। इसकी ऊँचाई 280 फुट अर्थात् 85 मीटर है। रायचन्द्र जी की माँ राजाबाई दृष्टिहीन थीं तथा वे जैन वृती श्राविका थीं, उनका सूर्यास्त होने के पूर्व ही भोजन करने का संकल्प था। घण्टाघर की आवाज से उन्हें समय का पता चलता था, जिससे कि वे अपनी सभी क्रियाएँ यथा समय पर कर लिया करती थीं। धन्य हैं वे सन्तानें जो अपने माता-पिता के लिये संकल्प पूर्ति में कैसे सहायक बने? सन् 1878 में जिस टॉवर निर्माण पर 2 लाख रुपया लगा था आज उसका क्या मूल्य होगा? यह टॉवर और संकल्प करनेवाली राजाबाई जैन गौरव हैं।

जैन कॉन्फ्रेंस के आजीवन सदस्यों के लिये विशेष सूचना

जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के समस्त आजीवन सदस्यों को सूचनार्थ निवेदन है कि आप आपना नाम, पता, फोटो, मोबाईल नंबर, ई-मेल, आधार कार्ड आदि जानकारी नीचे दिए गए लिंक पर जाकर अपडेट कर सकते हैं। यह लिंक एकदम सुरक्षित है। - सम्पादकीय टीम

Link - https://jainconference.org/MemberRegistration.aspx

जैन कॉन्फ्रेंस की सदस्यता एवं जैन कॉन्फ्रेंस की विविध योजनाओं के फॉर्म के लिए स्कैन करें :

जैन कॉन्फ्रेंस आजीवन सदस्यता फॉर्म

जीवन प्रकाश योजना उच्च शिक्षा सहायता फॉर्म

जीवन प्रकाश योजना चिकित्सा सहायता फॉर्म

मानव सेवा योजना (विधवा पेंशन) फॉर्म

जीवदया योजना फॉर्म

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

समाजरत्न दानवीर मामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

NAMO eWaste

Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com

नरेश आनन्दप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ✲ सम्पर्क : 90197 31906